P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नरेश मेहता के काव्य में श्रृंगार रस

शशि बाला रावत
प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
रा0स्ना0 महाविद्यालय,
अगस्त्यमुनि, रूद्रप्रयाग
भारत

सारांश

नरेश मेहता जी का जन्म एक ऐसे ब्राह्मण, परिवार में हुआ था, जो संस्कार से ही परम्परा में निष्णात् थे। मेहता जी का जन्म मालवा के शाजापुर गाँव में 15 फरवरी, सन् 1922 को हुआ था। मेहता जी बाल्यावस्था के डेढ़ वर्ष ही पूरा कर पाये थे कि उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। नरेश मेहता जी ने अपने काव्य में अंगीरस को स्वीकार किया है। उन्होंने अंगी रसों में श्रृंगार रस, स्थायी भाव, आलम्बन, उद्दीपन, अनुभाव, संचारी भाव को अंगी रस में प्रकट किया है।

मुख्य शब्द : नरेश मेहता, काव्य श्रृंगार रस।

प्रस्तावना

नरेश मेहता के काव्य में संयोग–श्रृंगार, विप्रलम्भ, पूर्व–राग, मान, प्रवास, करूण आदि का वर्णन किया गया है। ''श्रृंगार'' शब्द की उत्पत्ति ''श्रृंग'' धातु से हुई है। इसका अर्थ है ''कामोद्रेक''। ''श्रृंगार'' ''श्रृंग'' और ''आर'' दो शब्दों के योग से बना है। ''आर'' शब्द ''अ'' धातु से बना है, जिसका अर्थ गति या प्राप्ति देना है। आचार्य मम्मट ने ''काव्य प्रकाश'' में कहा है कि दाम्पत्य रति को ही ''श्रृंगार रस'' कहा गया है। रति नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से पुष्ट होकर ''श्रृंगार'' रस कहलाता है। ''श्रृंगार'' रस के अंतर्गत् स्त्री और पुरूष के पारस्परिक प्रेम का वर्णन होता है। नौ रसों में सबसे अधिक ''श्रृंगार'' रस का महत्व है। तत्व ज्ञान, संसार की असारता, सांसारिक पदार्थों की असारता तथा परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होने पर शान्त रस की निष्पत्ति होती है। शान्त रस का स्थायी भाव ''शम'' होता है। मेहता जी ने अपने काव्य में ''श्रृंगार'' रस की स्रोतस्विनी अपनी निश्चल गति से शान्त रस का सहारा लेती है। अतः ''श्रृंगार'' एवं शान्त रस को अंगी रस के रूप में स्वीकार किया गया है।

संयोग–श्रृंगार रस

जहाँ नायक–नायिका का मिलन होता है, वहां संयोग ''श्रृंगार'' होता है। संयोग ''श्रृंगार'' में ब्रह्मानंद तो नहीं लेकिन उनका सादृश्य अवश्य प्रकट हो जाता है। उनमें मनोनुकूल उच्चतम अनुभव आ जाता है। तभी तो रहस्यवादी उसकी ईश्वरोन्मुख प्रेम के अतिरिक्त और कोई पार्थिव मूल्य नहीं होता। संयोग श्रृंगार की पूर्ण सामग्री होने पर ही रस निष्पत्ति को यह आवश्यक नहीं है। संयोग श्रृंगार में नायक–नायिका की मिलन स्थिति का चित्रण किया जाता है। मेहता जी ने अपने काव्य में ''श्रृंगार'' रस का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

यथा– ''चाहता है मन,
तुम यहां बैठी रहो,
उड़ता रहे चिड़ियों सरीखा।
वह तुम्हारा धवल आँचल।''

मेहता जी ने प्रेमी और प्रेमिका के साथ गोमती तट पर किसी वृक्ष की जड़ पर बैठकर बिताये गए क्षणों को प्रकट किया है। प्रेमी–प्रेमिका से कहता है कि मेरा मन चाह रहा है कि तुम यहीं पर बैठी रहो और तुम्हारा यह सफेद आँचल चिड़ियों के पंखों के समान आकाश में उड़ता रहे। यही संयोग ''श्रृंगार'' कवि को प्रणयानुभूति की तीव्रता प्रदान करता है।

विप्रलम्भ–''श्रृंगार''

जहां प्रबल प्रेम के उत्पन्न होते हुए भी नायक–नायिका का मिलन नहीं हो पाता। वहीं विप्रलम्भ ''श्रृंगार'' उत्पन्न होता है। वियोग ''श्रृंगार'' में नायक–नायिका का विरह वर्णन कई प्रकार का होता है।

1– पूर्वानुमान, 2– मान, 3– प्रवास, 4– करूणात्मक।

यथा– ''मैं इसकी वेदना समझ सकता हूँ कि
तुमसे पृथक होना क्या होता है।

अँगुलियों में लिफ्ट, एक गुच्छ बनकर फिंक जाने का
कितना भयावह अर्थ होता है।''

इस कविता में कवि द्वारा, प्रेमी–प्रेमिका से कहता है कि मैं तुम्हारी वेदना समझता हूँ कि तुमसे अलग होना यह वेदना तो होती है। तुम्हारे ये बाल अंगुलियों में लिपटकर एक गुच्छे की तरह फेंक जाने के लिए कितना भयंकर अर्थ होता है। जैसे कि तुमसे हमेशा–हमेशा के लिए अंधकार में बिना पंख के तैरना होता है।

पूर्व–राग

मिलन या समागत से पूर्व दर्शन श्रवणादि में नायक–नायिका के हृदय में जो अनुराग का उदय होता है। उसे पूर्व राग कहा जाता है। रूप, सौंदर्य आदि का श्रवण दूत, सखी आदि में से किसी एक मुख से संभव होता है।

यथा– ''देखो, जहां तुम रोज मेरे सामने
किसी ठुमरी के अलभ्य बोल–सी आकर बैठती रही
वहां से मिट्टी ने
किसी दिन अनायास ही
तुम्हारा अंग–स्पर्श कर लिया होगा,
और प्रिया, जानती हो,
वहां एक मौलश्री खिल आयी है।''

इस कविता में प्रेमी–प्रेमिका से कहता है कि देखो, जहां तुम रोज मेरे सामने आकर किसी एकान्त जगह में बैठकर अलभ्य की भांति बोलती थी, वहां की मिट्टी ने किसी दिन अचानक तुम्हारा शरीर स्पर्श कर लिया और वहां एक मौलश्री फूल खिल गया होगा। जिन फुलों को तुम कल देख गयी थी, वे सब यादों के काव्य बनकर पृथ्वी पर दूर्वा की भांति चल रहे हैं और तलाबों के कर्णफूल हो गए हैं।

मान

मिलन के बीच में जो मिलन का अभाव होता है, उसे मान कहा जाता है। जो मान दम्पत्ति में से किसी एक पक्ष के दोष या अपराध से होता है, उसे ईर्ष्या मान कहा जाता है। जो केवल वियोग का आनंद लेने और संयोग से सुख की तीव्रता देने के लिए होता है, उसे प्रणयमान कहा जाता है।

यथा– ''क्यों? हठात् मेरे होठों पर,
अपने अधरों की सुगन्धित पंखुड़ियाँ रखकर
मेरे एकान्त को ऐसा अद्वितीय क्यों बना दिया?
क्यों सौंप दी,
आलिंगन की मधु–मादकता।''

मेहता जी ने नायक और नायिका के बीच के अभाव को फाल्गुन की रात्रि के समान प्रकट किया है। इसमें प्रेमी–प्रेमिका से मिलने की स्थिति को प्रकट किया है। कि मेरे इन होठों पर तुमने अपने अधरों की एक सुगन्धित पंखुड़ी रखकर मेरे इस प्रेम को क्यों एकांत–सा बना दिया है। तुमने अपने हृदय को यह माधवता को एकांत में नहीं किया।

प्रवास

मेहता जी ने कहा है कि नायक–नायिका की भिन्न देश की स्थिति को प्रवास कहा जाता है। प्रवास से पहले नायक–नायिका संगत होते हैं। प्रवास काल में नायिका अपने ''श्रृंगार'' की जरा भी परवाह नहीं करती है। वह मलिन वस्त्र धारण किए रहती है। प्रवास में प्रिय दूर यात्रा पर चला जाता है। दोनों का हृदय एक–दूसरे की स्मृति से सुवासित रहता है।

यथा– ''वर्ण धारण कर लेने पर
सुगन्ध स्वयं नहीं जाती,
उस तक जाना होता है।
लेकिन क्या तुम जानती हो, कि
वे विदा देना नहीं,
पृथक् करना होता है।''

मेहता जी ने इस पंक्ति में नायक के चले जाने का वर्णन किया है। नायक–नायिका से कहता है कि वस्त्र धारण कर लेने पर भी तुम्हारी यह सुगन्ध नहीं जाती। लेकिन तुम जानती हो, कि तुम्हारा यह विदा होना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है बल्कि यह तुमसे अलग होना प्रतीत होता है।

करूणात्मक

प्रेमी–प्रेमिकाओं में से किसी एक के दिवांगत हो जाने और उसके पुनरूज्जीवित हो जाने पर विरह–व्यथा करूणात्मक कहलाती है। पूर्वराग और दोनों की करूणात्मक हो जाते हैं। करूण में विप्रलम्भ की स्थिति तभी मानी जाती है, जबकि दिवंगत प्रिय से इसी जन्म में, इस देह से पुनः मिलने की आशा बनी रहे। करूण रस का स्थायी भाव शोक है।

यथा– ''बिना बनवास की आज्ञा मिले।
पिता की मृत्यु, विधवा जननियाँ
कौन है, इनका निर्मित?
पत्नी का हरण, पिता के मित्र जटायु का मरण,
मेरे लिए–
उपेक्षित अंगद हुए, देहदाही हुए हनुमान
किसके लिए?
उर्मिला–सी देवी,
विरहिणी किस संयोजन के लिए?''

निष्कर्ष

नरेश मेहता जी ने 'संशय की एक रात' में एक गहरी मानवीय चिंता से ग्रस्त मन का संशय प्रस्तुत किया है। राम जी भारतीय संस्कृति के मेरूदण्ड बन चुके हैं। इस महा–करूणा का तत्व नरेश मेहता के काव्य में जगह–जगह दृष्टिगोचर होता है। राम कुछ मौन होकर लक्ष्मण से कहते हैं कि लक्ष्मण, क्या तुम मेरी इस मनोःस्थिति को जान सकते हो? तुमने तो मेरे लिए दुःख भोगा, वन–वन भटके। एक तो पिता दशरथ की मृत्यु, विधवा माताएं। कौन है, इनका निवारण करने वाला। पत्नी सीता का हरण और पिता के मित्र जटायु का मरण तो मेरे लिए दुःख है। राम पश्चताप करते हैं कि उपेक्षित अंगद, जिसकी देह जल गयी हो, वे हनुमान किसके लिए कितना पश्चाताप है और देवी के समान उर्मिला का विरह में व्याकुल हो जाना आदि।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

नरेश मेहता के काव्य का अनुशीलन – पृष्ठ सं0– 113
नरेश मेहता के काव्य में रस–विवेचन– पृष्ठ सं0– 115
''तुम मेरा मौन हो''– नरेश मेहता– पृष्ठ सं0– 86
''संशय की एक रात''– पृष्ठ सं0– 20
''मद्यप्रस्थान,'' पृष्ठ से– 85
'बोलने दो चीड़ को' नरेश मेहता–पृ0 संख्या–118